National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2025; 1(60): 134-136
© 2025 NJHSR
www.sanskritarticle.com

Nitin Mundra
phd jyotirvigyan ,
Maharishi panini Sanskrit-evam vedic university,
Dewas road , Ujjain- MP

Correspondence:
Nitin Mundra
phd jyotirvigyan ,
Maharishi panini Sanskrit-evam vedic university,
Dewas road , Ujjain- MP

जन्म कुंडली का गोचरगत ग्रहों के आधार पर फलित एवं निदान

Nitin Mundra

प्रस्तावना- जन्म कुंडली में उपस्थित ग्रहों की स्थिति सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि एवं राहु केतु का गहराई से आकलन करके किसी भी जातक के जीवन में होने वाली घटनाओं के बारे में जाना जा सकता है। जन्म कुंडली में द्वादश भाव होते हैं। लग्न भाव जिससे जातक की शारीरिक स्थिति को देखा जाता है। द्वितीय भाव से धन संचय, कुटुंब, वाणी इत्यादि का विचार किया जाता है। तृतीय भाव पराक्रम, छोटे भाई-बहन, लेखन कार्य, का विचार किया जाता है। चतुर्थ भाव से माता, भूमि, वाहन, सुख इत्यादि का विचार किया जाता है। पंचम भाव से शिक्षा, बुद्धि, संतान एवं प्रेम का विचार किया जाता है। षष्ठ भाव से रोग ऋण एवं शत्रु का विचार किया जाता है। सप्तम भाव से पार्टनरशिप, विवाह एवं व्यापार का विचार किया जाता है। अष्टम भाव से गुप्त विद्या गुप्तांग समाधि एवं आयु का विचार किया जाता है। नवम भाव से भाग्य पिता धर्म ईश्वर यह कृपा धार्मिक यात्रा का विचार किया जाता है। दशम भाव से आजीविका एवं उच्च शिक्षा, मंत्र, मान सम्मान पिता का विचार किया जाता है। एकादश भाव से लाभ,आय के स्रोत, मनोरथ सिद्धि, बड़े भाई बहन का विचार किया जाता है। [1]द्वादश भाव से वैभव से विदेश यात्रा व्यय, मोक्ष, सैया, सुख, बंधन, हॉस्पिटल इत्यादि का विचार किया जाता है।

इन भावों में ग्रहों की अलग-अलग स्थिति के अनुसार जातक पर प्रभाव पड़ता है। जन्म कुंडली के लग्न भाव में कारक ग्रह सूर्य, चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र होते हैं। द्वितीय भाव के कारक ग्रह चंद्र बुध, गुरु, शुक्र होते हैं। तृतीय भाव के कारक ग्रह, सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि एवं राहु केतु होते हैं। चतुर्थ भाव के कारक ग्रह चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र होते हैं। पंचम भाव के कारक ग्रह सूर्य चंद्र, मंगल, बुध,, गुरु,शुक्र एवं राहु केतु होते हैं। छठे भाव के कारक ग्रह सूर्य ,मंगल, शनि एवं राहु केतु होते हैं। सप्तम भाव के कारक चंद्र, गुरु, शुक्र, शनि होते हैं। अष्टम भाव के कार्यक्रम कोई नहीं होते हैं क्योंकि मारक भाव होता है। नवम भाव के कारक ग्रह सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, होते हैं। दशम भाव के कारक ग्रह सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि एवं राहु केतु होते हैं। एकादश भाव के कारक ग्रह सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, एवं राहु केतु होते हैं। द्वादश भाव का कारक ग्रह अकेला शनी होता है

फलित ज्योतिष में ग्रहों का फल हमेशा महादशा अंतर्दशा प्रत्यंतर दशा में ही मिलता है। जिस ग्रह की दशा है अगर वह ग्रह जन्म कुंडली में कारक भाव में अपनी उच्च राशि स्वग्रही राशि या मित्र राशि में स्थित है तो जातक को दशा में शुभ परिणाम ही मिलते हैं। परंतु दशा स्वामी ग्रह कारक भाव में नीच राशि शत्रु राशि एवं शत्रु ग्रहों से दृष्ट यह युत हो तो जातक को अशुभ फलों की प्राप्ति होती है। जन्म कुंडली में हमेशा भावफल होता है ना की राशिफल, राशि तो ग्रह के बल को बढ़ा या कम कर सकती है। दशा के साथ यदि हम जन्म राशि से गोचर्गत ग्रहों की स्थिति देख ले तो फलित और भी सटीक प्राप्त होता है। गोचर गत से सूर्य एक राशि पर एक माह रहता है। चंद्रमा सवा दो दिन तक एक राशि पर रहता है। मंगल दो माह तक एक राशि पर रहता है। बुद्ध एक माह तक एक राशि पर रहता है। गुरु 13 माह तक एक राशि पर रहता है। शुक्र एक माह एक राशि पर रहता है। शनि ढाई वर्ष तक एक राशि पर रहता है। राहु केतु 18 माह तक एक राशि पर गोचरगत रहते हैं। साथ ही यह ग्रह किसी नक्षत्र

चरण पर स्थित है यह भी देखा जा सकता है। चंद्रमा जिस राशि में होता है वही जन्म राशि होती है। जन्म राशि को लग्न मानकर ग्रहों को बैठा दिया जाता है। जन्म राशि से सूर्य अगर 3,6,11 भाव में हो तो जातक को शुभ फल प्रदान करता है।

जन्म राशि से चंद्रमा 1,2,4,5,9,10,11 भाव में हो तो जातक को शुभ फल प्रदान करता है। मंगल 3,6,10,11 भाग में हो तो जातक को शुभ फल प्रदान करता है। बुध ग्रह यदि द्वितीय चतुर्थ छठे अष्टम नवम दशम एवं एकादश भाव में हो तो शुभ फलों को देने वाला होता है। गुरु ग्रह अगर 2,5,7,9, 11 भाव का गुरु शुभ फलों को देने वाला होता है। शुक्र यदि जन्म राशि से 1, 2, 3, 4, 5, 8, 9, 11 भाव का शुक्र जातक को शुभ फल प्रदान करने वाला होता है।

जन्म राशि से शनि 3,6, 11 भाव का शनि शुभ फल प्रदान करता है। चंद्र राशि से राहु केतु 3, 6, 11 भाव में हो तो शुभ फलों को देने वाले होते हैं।

गोचर्गत ग्रह में चंद्रमा से सवा दो दिन का फलित निकाला जाता है। सूर्य ग्रह से एक माह का फलित निकाला जाता है। मंगल ग्रह से एक माह का फलित निकाला जाता है। बुध ग्रह से एक माह का फलित निकाला जाता है। गुरु ग्रह से 13 माह का फलित निकाला जाता है। शुक्र ग्रह से एक माह का फलित निकाला जाता है। शनि ग्रह से ढाई वर्ष का फलित निकाला जाता है। राहु एवं केतु छाया ग्रह से 18 माह का फलित निकाला जाता है। साथ ही महादशा अंतर्दशा प्रत्यंतर दशा को जोड़ने से फलित सटीकता की और बढ़ता जाता है।

ग्रह गोचर को और सूक्ष्मता से देखने के लिए ग्रहों की अवस्था को देखना परम आवश्यक है। बाल अवस्था, किशोर अवस्था, युवा अवस्था, वृद्धा अवस्था एवं मृत अवस्था। जब ग्रह गोचर से 12 से 18 डिग्री के मध्य हो तो युवा अवस्था में होता है। उस ग्रह का बल बढ़ जाता है साथ ही जन्म राशि से ग्रह कारक भावों में आते हैं तो जातक को शुभ फलों की प्राप्ति कराते हैं। और जब गृह निर्बल अवस्था बाल एवं व्रद्ध,मृत में आते हैं तथा नीच राशि शत्रु राशि एवं शत्रुओं से दृष्ट हो तो जातक को अशुभ फल की प्राप्ति कराते हैं। कहने का तात्पर्य है यह है कि गृह जितना शुभ अवस्था अपनी उच्च मित्र एवं स्वग्रही राशि में शुभ ग्रहों से संबंध बनाएगा ग्रह का उतना शुभ फल उतना बढ़ता जाता है।

उदाहरण के लिए जन्म कुंडली विश्लेषण

11-09-1990

समय जन्म- 4-35

स्थान- उड़ीसा

लग्न कुंडली

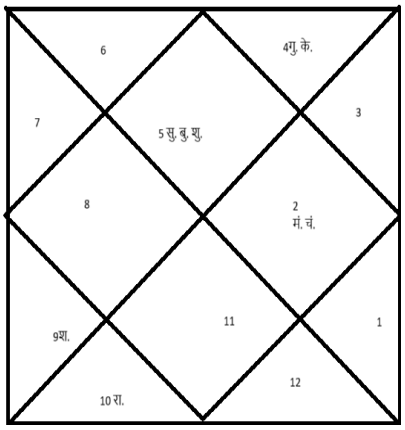

महादशा, अंतर्दशा, प्रत्यंतरदशा

गुरु बुध चंद्र

राशि से गोचर

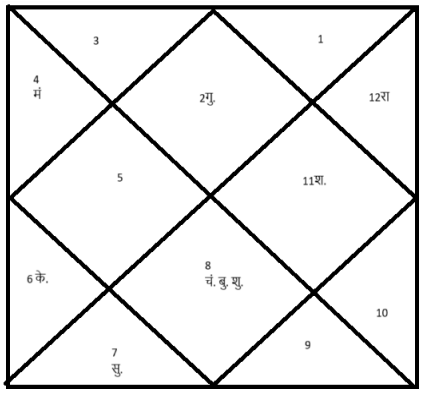

गुरु चंद्र राशि से गोचर में लग्नगत भाव में बैठने से जातक को आर्थिक उन्नति में अवरोध उत्पन्न करता है। स्वास्थ्य में खराबी करता है बुद्धि को बिगाड़ देता है। दामपत्य जीवन एवं पार्टनरशिप व्यापार नौकरी में रुकावट पैदा करता है। जातक को भाग्यहीन बनाता है। धर्म ईश्वर से विश्वास को कम करता है। अंतर्दशा भी गुरु की चलने के कारण जातक को अत्यधिक संकटों का सामना करना पड़ता है। जातक को धन संचय सुख समृद्धि संतान दांपत्य भाग्य एवं कर्म क्षेत्र में विशेष रूप से बधाओ का सामना करना पड़ता है। बुध के प्रत्यंतर आकर सप्तम भाव में बैठने से गुरु महादशा का स्वामी अंतर्दशा का स्वामी गुरु एवं प्रत्यंतर दशा का स्वामी बुध तीनों ही खराब अवस्था में होने के कारण जातक को सभी कार्यों में रूकावटों का सामना करना पड़ता है।

उपाय के तौर पर-

जातक को हर गुरुवार को पीली वस्तुओं का दान करना उत्तम रहेगा।

जातक को हर बुधवार को हरी वस्तुओं का दान करना उत्तम रहेगा।

जातक को हरी एवं पीले वस्त्रो का परहेज रखें।

गोचर से गुरु जब चंद्र राशि से द्वितीय भाव में आएंगे तब जातक की स्थिति में सुधार होगा तब तक जातक को इन उपायों का सहारा लेना अति आवश्यक रहेगा।

निष्कर्ष- किसी भी जातक की जन्म कुंडली का आकलन 12 भागों में उपस्थित राशि एवं ग्रहों की स्थिति ग्रहो का बल शुभ अशुभ प्रभाव महादशा अंतर्दशा प्रत्यंतर दशा की गणना एवं जन्म राशि से गोचर्गत ग्रह का आकलन करने से जातक के जीवन में सभी शुभ एवं अशुभ फलों को जाना जा सकता है। साथ ही इन शुभ अशुभ फलों का प्रभाव जातक पर कब तक रहेगा यह भी गोचर से निकाला जा सकता है। साथ ही अशुभ ग्रहों का दान एवं शांतिप्रद मंत्र जाप से आ रही परेशानियों को न्यूनतम किया जा सकता है। तथा शुभ ग्रहों का रत्न माला रंग पहनकर उनके शुभ प्रभाव को बढ़ाया जा सकता है। महादशा गाड़ी की तरह होती है परंतु गोचर रोड की तरह होती है जिस तरह गाड़ी अच्छे रोड पर अच्छी चलती है और खराब गड्ढे वाले रोड पर डगमगाति है उसी प्रकार महादशा अंतर्दशा प्रत्यंतर दशा गोचर की शुभ और अशुभ स्थिति पर निर्भर करती है। इनमें ज्यादा समय वाले ग्रह शनि राहु केतु एवं गुरु होते हैं जिनसे जातक को काफी समय तक अशुभता को सहन करना पड़ता है इससे विपरीत कम समय वाले ग्रह चंद्र सूर्य मंगल बुध एवं शुक्र होते हैं जो जातक को कुछ समय के लिए शुभ या अशुभ फलों को प्रदान करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ

01)ग्रंथ का नाम- भारतीय ज्योतिष
व्याख्या कार- डॉक्टर नेमीचंद ज्योतिषाचार्य
प्रकाशक- भारतीय ज्ञानपीठ बी/45/47 कनॉट प्लेस न्यू दिल्ली
संस्करण- नवम संस्करण 1981

02)ग्रंथ का नाम-सारावली
व्याख्याकार- डॉक्टर मुरलीधर चतुर्वेदी
प्रकाशक- मोतीलाल बनारसी दास वाराणसी
संस्करण- 1977, 1981, 1986

03)ग्रंथ नाम-वृहत संहिता
व्याख्याकार ग्रंथकर- शर्मोपाह पंडित अत्युतानंद झा
प्रकाशक चौखंबा विद्या भवन
संस्करण 2005 ई

04)गोचर विचार
व्याख्याकार- ज्योतिर्विद जगन्नाथ भसीन
प्रकाशक- रंजन पब्लिकेशन 16 अंसारी रोड दरियागंज नई दिल्ली
संस्करण2003

05)भ्रगु संहिता-राकेश शर्मा (महर्षि भृगु)
रोन आर प्लाजा दिल्ली
संस्करण 2024

06)गोचर विज्ञान
रमेश चंद्र नंदवाना
महामाया पब्लिकेशंस जालंधर

संदर्भ:

[1] गो. वि. पृ, 73